मरुदम फार्म स्कूल में प्रकृति शिक्षा

पूर्णिमा अरुण

प्रकृति बच्चों के लिए चारों ओर की दुनिया है। यह सर्वव्यापी है। यह हर जगह है। छोटे बच्चों को बाहर रहना बहुत पसन्द होता है। उनके लिए बाहर निकलकर गतिविधियाँ करना ज़रूरी है। इससे वे पर्यावरण से परिचित होते हैं, चीज़ों के बारे में आधारभूत ज्ञान हासिल करते हैं और उनमें रिश्तों, सम्बन्धों एवं चीज़ों के विस्तार की समझ पैदा होती है; इससे उन्हें समृद्ध संवेदी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होती हैं।

ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य के भीतर सबसे पहला इन्द्रियबोध 'स्पर्श' के रूप में विकसित होता है। यह कई तरीक़ों से हमारे प्रकृति बोध को संचालित करता है, जैसे मिट्टी का स्पर्श करना, कंकड़-पत्थर उठाना, रेत में खेलना, चेहरे पर हवा और धूप का एहसास या पानी के गीलेपन की अनुभूति। निश्चित ही, गन्ध और स्वाद की इन्द्रियाँ भी स्पर्श से घनिष्टता से जुड़ी होती हैं और काफ़ी गहन होती हैं, जिसके कारण बच्चे अक्सर चीज़ों को मुँह में डालने से ख़ुद को नहीं रोक पाते, जो उनका अपने ढंग का अन्वेषण होता है। बच्चे प्रकृति की समझ ज़मीन से ही बनाना शुरू करते हैं क्योंकि ज़मीन उनके सबसे क़रीब होती है और वे ज़मीन के।

मरुदम फार्म स्कूल[1] में हमारी गोल-आकार वाली किंडरगार्टन बिल्डिंग एक ऐसा माहौल बनाती है, जहाँ बच्चे अपने चारों ओर को देख पाते हैं और बाहर होने वाली चीज़ों को महसूस कर पाते हैं, उनकी गन्ध ले पाते हैं और उन्हें देख-सुन पाते हैं। इस तरह वे चारदीवारी के बीच होते हुए भी बाहर की दुनिया में होने का एहसास कर पाते हैं। यहाँ मधुमक्खियाँ आती-जाती हैं, ततैए दीवारों पर बसेरा बनाते हैं, चमगादड़ रहते हैं, मेंढक, चूहे यहाँ के स्थाई निवासी हैं और साँप भी यहाँ कुछ मर्तबा दर्शन दे चुके हैं।

किंडरगार्टन के पास एक ठोस प्रकृति शिक्षा कार्यक्रम है, जिसमें प्रतिदिन स्कूल में एक ही तय रास्ते पर एक घण्टे लम्बा प्रकृति भ्रमण शामिल है। हमारा अनुभव रहा है कि जब बच्चे उन्हीं पेड़ों और पत्थरों के बीच से चलते हुए एक ही रास्ते से लगातार गुज़रते हैं, वे अलग-अलग मौसमों को आत्मसात कर लेते हैं। यह गहरी समझ बच्चों के खेलों के ज़रिए साफ़ नज़र आती है; मिसाल के तौर पर, गर्मियों में रचनात्मक और कल्पनायुक्त खेलों, जैसे घर बनाने, गुम्बद, बाँध और तालाब बनाने के लिए, वे बहुत-सी सूखी लकड़ियों, पत्तों और टहनियों का इस्तेमाल करते हैं; और बारिश के मौसम में गीली-मिट्टी, कंकड़ व पानी का इस्तेमाल करते हैं, जबकि सर्दियों में वे तितलियों के पंख, जंगली बेर और फल वगैरह इकट्ठा करते हैं।



चित्र-1 : किंडरगार्टन के बच्चों द्वारा प्राकृतिक रंगों और हाथ की छपाई से बनाया गया एक लटकाने वाला बैग।

गर्मियों के दिनों में यहाँ कई फूल होते हैं। मिसाल के लिए, पलाश (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा) के जो फूल ज़मीन पर गिरते हैं, वे उन्हें इकट्ठा कर प्राकृतिक रंजक बनाते हैं जिसका उपयोग वे बाद में कपड़ों को रंगने के लिए करते हैं। इस बार गर्मी में, उन्होंने इस कपड़े का इस्तेमाल हाथ से सिले लटकन वाले बैग बनाने के लिए किया।

इसके साथ ही, प्रकृति बच्चों के लिए खेल का मैदान भी होती है, जहाँ वे अपनी सभी नई शारीरिक गतिविधियों को विकसित करते हैं, जैसे घिसटना, चढ़ना और सन्तुलन बनाना। मिसाल के लिए, हमारे स्कूल में बच्चों को पेड़ों पर चढ़ने, चट्टानों पर सन्तुलन बनाने, गड्ढों में घुसने और घिसटते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जब बच्चे ऐसा करते हैं, तब हमने देखा है कि वे किस तरह इन नए अन्वेषणों में एक-दूसरे की मदद करते हैं। और ऐसे में, इस बात की समझ कि किसी स्थान पर उनका शरीर कहाँ होता है, अक्सर बच्चे के प्रकृति बोध के केन्द्र में होती है।



चित्र-2: पड़ोस में मौजूद बरगद के पेड़ पर चढ़ने में एक-दूसरे की मदद करते बच्चों का समूह।

विकास और जागरूकता के चरण

पाँच से सात साल की उम्र में बच्चे 'मनुष्य' के रूप में अपने और प्रकृति के अन्य तत्वों के बीच फ़र्क़ के प्रति सचेत होने लगते हैं। वे विशुद्ध संवेदी रूप वाली परस्पर क्रिया से आगे बढ़कर, इसके जिज्ञासा और सवालों से भरे रूप की ओर जाने लगते हैं, जिसे हम उनके विस्तृत अवलोकनों की शुरुआत के रूप में देख सकते हैं। यही वह उम्र है, जब एक शिक्षक (चाहे स्कूल में हो या घर पर) को ध्यानपूर्वक बच्चे की सहजता को बनाए रखते हुए, उसकी जिज्ञासा को फूलने-फलने का अवसर देना चाहिए। इस उम्र में नए अनुभवों से रूबरू होने और उनसे अर्थ निकालने की क्षमता और सामर्थ्य अद्भुत होती है और प्रकृति इस क्षमता को भुनाने के अनगिनत अवसर देती है। मिसाल के लिए, जब हम बच्चों के साथ जंगल में जाते हैं तो जंगल की हर छोटी चीज़ उनका ध्यान खींचती है। वहाँ वे नाना प्रकार की बनावटों, काँटों, मिट्टी के रूपों, सूखे पत्तों से दो-चार होते हैं। उन्हें विभिन्न अवधारणाओं जैसे छलावरण, विविधता, तापमान आदि को समझना पड़ता है।

मरुदम में इस उम्र के बच्चों को हम प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा मुहैया कराते हैं, जिसमें हम अवलोकनों को मौलिक जाँच से जोड़ते हैं। नन्हे वैज्ञानिकों की तरह वे बग बॉक्स, मापन टेप, मैग्निफाइंग ग्लास और ग्राफ़ बनाने के लिए चेक वाले पेपर साथ रखते हैं। हमने एक बार एक छह साल की बच्ची को चीटियों का अध्ययन करते हुए देखा। उसने गौर किया कि चीटियाँ कैसे अपना घर बदल रही हैं और अपना लार्वा एक जगह से दूसरी जगह ले जा रही हैं — और फिर उसने अन्दाज़ा लगाया कि वे बारिश क़रीब आने की वजह से ऐसा कर रही हैं। एक अन्य बच्ची ने बद्धहस्त कीट (praying mantis) का अध्ययन किया और वापस क्लास में आकर बताया कि वह उसके द्वारा देखे गए चित्रों से कितना अलग था। जब उसे 'औपचारिक' क़िताब में वास्तविक चित्र दिखाए गए (जो कि बड़े बच्चों के लिए थे), तब जाकर वह सन्तुष्ट हुई। इस उदाहरण से यह बात भी पता चलती है कि बच्चों को कम समझदार मानकर बात करने की ज़रूरत नहीं होती है। जब वे स्वयं की जिज्ञासा से पैदा हुए अध्ययन में लगे होते हैं, तो उन्हें जो भी सामग्री दी जाती है, उससे वे अर्थ निकालना सीखेंगे — इसलिए ज़रूरी है कि हम ज़िम्मेदारी दिखाते हुए उन्हें सटीक और समझदारी भरे स्पष्टीकरण दें।

बच्चे स्वाभाविक रूप से सतर्क होते हैं और इसलिए चीज़ों को बारीक़ी से देखने में सक्षम होते हैं। वे अपने उत्साह और जिज्ञासा में और अधिक खोज करने की जल्दबाज़ी में रहते हैं, जैसे उन्हें रोमांचित करते किसी पौधे या जानवर को छूने के लिए पहुँचना, फूल तोड़ना, चिड़ियों के घोंसलों तक पहुँचना, साँप का पीछा करना आदि। ठीक इसी समय, बच्चे सहजता से इस बात की समझ बना पाते हैं कि पर्यावरण में वे अन्य प्राणियों के साथ रहते हैं। यह शिक्षकों को उन्हें शान्तिपूर्ण अवलोकन की आवश्यकता को समझाने और हमारे इर्द-गिर्द रहने वाले जीवों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने का अवसर भी देता है।

मरुदम में हम अक्सर अपने आस-पास मौजूद अन्य प्राणियों के सम्मान और देखभाल के बारे में बात करते हैं। जब हमने ‘वॉयसेज़ ऑफ चिल्ड्रन’ नामक एक प्रोजेक्ट किया, तो कई बच्चों ने ख़ुद को सनबर्ड और चित्तीदार कबूतरों के रूप में व्यक्त किया, जो उनकी कक्षाओं के चारों ओर घोंसला बनाते हैं। बहुत जल्द, हमने बच्चों को घोंसलों और उसके आस-पास के इलाकों में सावधानी बरतने की छोटी पर्चियाँ बनाते पाया, जिसमें उन्होंने दूसरों को सावधान रहने की चेतावनी दी हुई थी।

आठ से दस साल के बच्चों में प्रकृति के साथ यह जुड़ाव और



चित्र-3 : एक 10 साल के बच्चे द्वारा बनाई गई कलगीदार सर्प चील की पेंटिंग। इस पक्षी को उसने प्रकृति शिविर के दौरान देखा था।

विकसित होता है और इसमें बच्चों में दुनिया की गहरी होती समझ का भी श्रेय होता है। वे समझने लगते हैं कि वे खाद्य शृंखला का एक हिस्सा हैं और इस सच्चाई से रूबरू होकर उनका प्रकृति का अनुभव भी बदलता है। उन्हें प्रजातियों के बीच अन्तर्निर्भरता की अवधारणा समझ में आने लगती है। वे बारीक़ियों पर और ध्यान देना भी शुरू कर देते हैं जैसे कि विभिन्न पक्षी प्रजातियों और उनके आवासों के बीच के अन्तर। मरुदम में नवरंग और यूरेशियन कोयल जैसे प्रवासी पक्षियों के आगमन को देखकर बच्चे अक्सर बहुत प्रेरित और उत्साहित हो जाते हैं; उनकी दिलचस्पी यह जानने में भी बहुत होती है कि ये पक्षी कहाँ से आते हैं। कई मर्तबा, सुबह की कक्षाओं के दौरान कोई बच्चा किसी प्रवासी पक्षी को देखता है, जिसके बाद शिक्षकों सहित पूरी कक्षा उन पक्षियों का स्वागत करने कक्षा के बाहर निकल पड़ती है। प्रकृति शिक्षा से जुड़े होने के नाते मरुदम में हमें यह समझ आया कि इस शिक्षा को तयशुदा टाइम टेबल तक सीमित नहीं किया जा सकता है।

मरुदम में हम पिछले छह महीनों से पैच-मॉनिटरिंग कार्यक्रम चला रहे हैं — हर हफ़्ते, दिन के एक ख़ास समय में आधे दिन



चित्र-4: एक बच्चे द्वारा पैच-मॉनिटरिंग के दौरान देखी गई चीज़ों का चित्रण और क्रमबद्ध सारांश।

का समय इसके लिए निर्धारित किया गया है। बच्चे एक ख़ास पैच चुनते हैं जो एक छोटा झाड़ीदार क्षेत्र, कोई पौधा, कोई रास्ता जो तितलियों को आकर्षित करता हो, बग़ीचे का कोई छोटा हिस्सा या आस-पास का कोई झाड़ीदार रास्ता हो सकता है और फिर वे उसकी जैव विविधता का अवलोकन करते हैं। वे एक क्रम में कीड़ों, पक्षियों, झाड़ियों और पेड़ों के नाम दर्ज करते हैं। हमने इस सतत कार्यक्रम के दौरान कुछ अविश्वसनीय लम्हों और सीखों का अनुभव किया है। मिसाल के लिए, जब हम एक काँटेदार झाड़ी के बगल में एक अरण्डी का पौधा देख रहे थे, तो हमने एक मकड़ी को एक तितली (कॉमन कैस्टर) का शिकार करते देखा जो अरण्डी के पौधे पर अण्डे देती है। ठीक उसी समय, एक ब्रोंज़बैक ट्री स्नेक एक छोटे मेंढक का शिकार करने की कोशिश कर रहा था; एक भुजंगा पक्षी ने उसी क्षण एक ड्रैगनफ्लाई को पकड़ लिया। इस तरह के समृद्ध अनुभव एक पारिस्थितिकी तंत्र में अन्तर्निर्भरता को समझने के लिए अपार अवसर प्रदान करते हैं।

प्रकृति में किसी भी प्रजाति के बच्चों की तरह, हर पल एक ऐसा क्षण होता है जिसमें हमारे बच्चे किसी नई चीज़ से दो-चार होते हैं और उसे समझने की कोशिश करते हैं।

और हर प्रजाति के बच्चों की तरह ही, वे भी अपने आस-पास के वयस्कों के व्यवहार से बहुत कुछ सीखते हैं। मरुदम

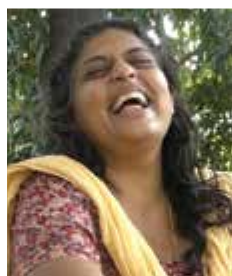
में बच्चे और वयस्क, दोनों अपने प्रकृति शिक्षा के भ्रमण में साथ-साथ सीखते-सिखाते हैं।

यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों से सहयोग और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। हमने देखा है कि यह सहयोग कई रूपों में हो सकता है और इसके मूल में बच्चों के उत्साह में भागीदार बनने की भावना होती है; कुछ माता-पिता इसमें महज प्रेक्षक न रहते हुए भागीदार की भूमिका भी निभाते हैं। हमने इच्छुक माता-पिता को स्कूल के स्टाफ और बच्चों के साथ हमारे प्रकृति भ्रमण, पौधारोपण अभियानों और बाग़वानी में शामिल होने के लिए एक मंच प्रदान किया है। हम यह भी महसूस करते हैं कि प्राथमिक स्कूल के स्तर पर यह अनुभवात्मक शिक्षा और बुनियाद बच्चे के लिए अनुकूलन, प्रजनन, प्रवास, पारिस्थितिक शरण आदि उन अवधारणाओं की ठोस समझ बनने की कुंजी है, जो मिडिल स्कूल में विकसित होती हैं।

बच्चे के नैसर्गिक आकर्षण को जीवित रखना सबसे ज़रूरी है। प्रत्येक बच्चे के लिए प्रकृति के साथ जुड़ना एक अद्भुत यात्रा है और जब इसमें उन्हें अपने आस-पास के वयस्कों का साथ मिलता है, तो यह उनके जीवन के कुछ सबसे सार्थक सम्बन्धों में परिणित होने की क्षमता रखती है।

Endnotes

i https://vikalpsangam.org/article/marudam-farm-school-becoming-while-it-is-being/



पूर्णिमा अरुण मरुदम फार्म स्कूल की संस्थापक सदस्य और प्रधानाध्यापक हैं। वे स्कूल को चलाने की हर प्रक्रिया (पाठ्यचर्या विकास से लेकर शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रशासन तक) में शामिल हैं। वे पिछले 20 सालों से अपनी कक्षाओं में विज्ञान को लेकर नए नज़रिए बनाने में भी शामिल रही हैं। पूर्णिमा पिछले आठ सालों से, देश भर की पारम्परिक कला और शिल्प का प्रदर्शन करने के लिए मरुदम में एक वार्षिक शिल्प सप्ताह का आयोजन कर रही हैं। वे ऑल्टरनेटिव एजुकेशन नेटवर्क की एक सक्रिय सदस्य भी रही हैं और तीन साल पहले इसके तमिलनाडु खण्ड की शुरुआत करने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनसे poornima.arun12@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अभिषेक दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय